डॉ. पांडुरंग पाटील
अध्यक्ष,
हिन्दी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय
कोल्हापुर

* संस्तुति पत्र *

मैं संस्तुति करता हूँ कि श्री. कुबेर कल्लाप्पा शेडबाळे के " मोहन राकेश के एकांकियों में अभिनेयता " इस लघु शोध–प्रबंध को परीक्षा हेतु अग्रेषित किया जाए ।

कोल्हापुर

दिनांक :–

(डॉ. पांडुरंग पाटील)
अध्यक्ष
हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर-४१६००४

डॉ. डी. के. गोटुरी,
एम्. ए., पीएच्. डी.
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
डॉ. घाळी महाविद्यालय,
गडहिंग्लज, जि. कोल्हापूर
[महाराष्ट्र]

*** प्रमाण पत्र ***

मैं डॉ. डी. के. गोटुरी, गडहिंग्लज प्रमाणित करता हूँ कि श्री कुबेर कल्लाप्पा शेडबाळे ने शिवाजी विश्वविद्यालय कोल्हापुर की एम्. फिल. [हिन्दी] उपाधि के लिए प्रस्तुत लघुशोध प्रबन्ध "मोहन राकेश के एकांकियों में अभिनेयता" मेरे निर्देशन में सफलतापूर्वक पूरा किया है। जो तथ्य लघुशोध प्रबन्ध में प्रस्तुत किए गए हैं, मेरी जानकारी के अनुसार सही हैं। श्री कुबेर शेडबाळे के शोधकार्य के बारे में मैं संतुष्ट हूँ।

गडहिंग्लज,
दि. ३१ दिसम्बर १९९७।

[डॉ. डी. के. गोटुरी]
निर्देशक

*** प्र ख्या प न ***

"मोहन राकेश के एकांकियों में अभिनेयता" यह लघुशोध प्रबंध मेरी मौलिक कृति है, जो एम्. फिल. [हिन्दी] उपाधि के लिए लघुशोध प्रबंध के रूप में प्रस्तुत की जा रही है। यह कृति इससे पहले शिवाजी विश्वविद्यालय कोल्हापुर या अन्य किसी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है।

कोल्हापुर।

दि. ३१ दिसम्बर १९९७।

[श्री. कुबेर कल्लाप्पा शेडबाले]
शोधछात्र

*** ऋण निर्देश ***

मैं भी एक कलाकार हूँ, मैं भी कुछ लिख सकता हूँ, मैं भी कुछ बन सकता हूँ, इस प्रकार का आत्मविश्वास मुझमें निर्माण करने का प्रथम बार किसने प्रयास किया हो ? तो वे है प्रा. सौ. एम्. एस. जाधव, प्रा. श्री. ना. पाटील, और डॉ. पी. एस्. पाटील जिन्होंने कहानी कथन और वक्तृत्व प्रतियोगिताओं के लिए अनमोल मार्गदर्शन किया है, प्रोत्साहन दिया है। जिसका यह फल है कि, मैंने आज "अभिनय" इस विषय को लेकर कुछ लिखाने का प्रयास किया है। मेरे इन परम पूज्य गुरुजनों के ऋण में रहने में ही मुझे आनंद है। साथ ही मेरा प्रिय दोस्त अजित पाटील ने मुझे सब प्रकार की मदद ही नहीं मेरी मन की दृढता भी बरकरार रखी है। जिसके ऋण से मैं जिंदगीभर मुक्त नहीं हो सकता।

प्रस्तुत लघुशोध-प्रबन्ध लेखन के लिए निर्देशक के रूप में प्रा. डॉ. डी. के. गोटूरी जी का जो अनमोल मार्गदर्शन मिला है, क्योंकि अपने सदैव व्यस्त जीवन में भी मेरे लिए कुछ समय निकालते थे। साथ ही डॉ. बी. बी. पाटील जी ने जो मार्गदर्शन और सहयोग दिया है वह अनमोल है। प्रा. डॉ. अर्जुन चव्हाण, प्रा. पोतदार प्रा. बाबासाहेब पोवार, प्रा. डी. ए. पाटील, प्रा. बी. ए. चौगुले, प्रा. रजनी भागवत, प्राचार्य श्रीधर हेरवाडे आदि अन्य गुरुजनों का समय समय पर जो सहयोग, प्रोत्साहन और प्रेरणा देने का कार्य किया है उन सभी का मैं शुक्र गुजार हूँ।

साथ ही मेरे प्रिय दोस्त साताप्पा चव्हाण, प्रशांत पितालीया, रवीन्द्र चौगुले, डॉ. काकासाहेब पाटील, अनिल खड्ड और वीर सेवा दल के सभी सदस्य इनका जो सहयोग और प्रोत्साहन मिला है उसे मैं भूला नहीं सकता।

हिन्दी विभाग के वसंत दिडें और अनिल साळुंखे ने भी यथासमय और यथायोग्य मदद की है उनका भी मैं आभार प्रकट करता हूँ।

प्रस्तुत लघुशोध प्रबंध के लिए टंकलेखन में सहायता करने का कार्य प्रमोद गुप्ता ने किया है उनका भी मैं आभार प्रकट करता हूँ।

अत: इस प्रकार प्रस्तुत लघुशोध प्रबंध का कार्य सफल बनाने में जिनका सहयोग मिला है उन ज्ञात, अज्ञात हितचिंतकों के प्रति आभार प्रकट करता हूँ और यह लघु-शोध प्रबंध विद्वतजनों के सामने परिक्षणार्थ प्रस्तुत करता हूँ।

कोल्हापुर।
दि. ३१ दिसम्बर १९९७।

शोधछात्र

[श्री कुबेर शेडबाळे]

* भूमिका *

जब मैं शिवाजी विश्वविद्यालय में एम्. ए. १ का अध्ययन कर रहा था उसी समय संयोगवश पाठ्यक्रम में राकेश लिखित "आधे अधूरे" नाटक लगाया गया था। जब मैंने पहली बार इस नाटक को पढ़ना प्रारंभ किया है, तो न जाने मेरे मन में इस नाटक के बारे में एक प्रकार से उत्सुकता निर्माण हुई और उसी उत्सुकता के धुन में मैंने यह नाटक पूरा पढ़ने के बाद मेरे मन में इस नाटक का इतना प्रभाव पड़ा कि उसी समय मैंने यह तय किया कि इस नाटक का अभिनेयता की दृष्टिसे अध्ययन करना आवश्यक समझा। जब हमारी अध्यापिका [प्रा. सौ. एम्. एस. जाधव] यह नाटक पढ़ाने लगती तब मेरे मन में राकेश के इस नाटक के अभिनय के बारे में अध्ययन करने की लालसा और भी बढ गयी। संयोगवश एम्. फिल्. उपाधि के हेतू "लघुशोध प्रबंध" के लिए विषय तय करने की बात आयी तब मेरे मन में पहली बार राकेश के एकांकियों के बारे में अध्ययन करने का विचार आया। यह विचार मेरे अपने निर्देशक प्रा. डॉ. डी. के. गोटुरी के सामने प्रकट की तब वे भी मेरे विचार से तात्काल सहमत हुए जिसे कारण मैंने तुरंत राकेश लिखित एकांकियों में अभिनेयता इस विषयपर लघुशोध प्रबंध लिखने का तय किया और मैंने अपना कार्य प्रारंभ किया।

मोहन राकेश लिखित "मोहन राकेश के एकांकियों में"अभिनेयता" इस लघुशोध प्रबंध को चार अध्यायों में विभक्त किया है जो निम्नलिखित है.,

[१] एकांकी सिद्धांत और प्रकार।

[२] अभिनय स्वरूप निर्धारण एवं अंग।

[३] मोहन राकेश के एकांकियों का कथ्य।

[४] मोहन राकेश के एकांकियों में अभिनेयता।

प्रथम अध्याय में अभिनेयता की दृष्टिसे एकांकियों की ओर देखने से पहले एकांकी का उद्भव उसके सिद्धांत, उसके तत्व और प्रकारों का भी अध्ययन करना आवश्यक मानकर उसके संबंध में निम्नप्रकार से चर्चा की है।

इसमें एकांकी का उद्भव कब हुआ ? कैसे हुआ, आदि के बारे में चर्चा करते हुए अंग्रेजी, हिन्दी और मराठी आदि विद्वानों की परिभाषा देने के बाद मेरी दृष्टिसे इसकी परिभाषा कैसे होनी चाहिए ? इसका उल्लेख किया है। इसके बाद इसके सिध्दांत के बारे में चर्चा करते हुए, उनके तत्वों का विचार किया है और अंत में उनके प्रकारों का जिक्र किया है।

दूसरे अध्याय में जिसप्रकार एकांकी का उद्भव, सिद्धांत और प्रकारों का अध्ययन करना आवश्यक माना उसी प्रकार अभिनय की उत्पत्ति, उसका स्वरूप, और अभिनय के विभिन्न अंगों का परिचय देना आवश्यक मानकर निम्न-लिखित प्रकार से चर्चा की है।

इसमें अभिनय का उद्भव कब हुआ ? कैसे हुआ ? इसका विचार करते हुए भिन्न विद्वानों ने इसकी परिभाषा कैसी की है इसका जिक्र करते हुए, मेरा अंत में मत प्रकट करने का प्रयास किया है। इसके बाद भारतीय अभिनय का स्वरूप, किस प्रकार है ? इसकी चर्चा करते हुए उसमें आंगिक, वाचिक, सात्त्विक, आहार्य अभिनयपर चर्चा करते हुए, अभिनय गुणों का भी चर्चा करने का प्रयास किया है। इसके अतिरिक्त भारतीय अभिनय में रस का क्या महत्व है ? इसे स्पष्ट करते हुए इसपर अन्य देशीय अभिनय का किस प्रकार प्रभाव पड़ा इसकी चर्चा की है। अंत में भारतीय अभिनय किस प्रकार भटकता रहा है इसका उल्लेख किया गया है।

तृतीय अध्याय में अभिनय की दृष्टिसे राकेश के एकांकियों में "कथ्य" किसप्रकार है। इसकी चर्चा करने का प्रयास निम्नलिखित रूप में किया गया है।

राकेश के कुल दो एकांकी संग्रह है। १] "अण्डे के छिलके अन्य एकांकी तथा बीजनाटक" २] "रात बीतने तक तथा अन्य ध्वनिनाटक" में जो कथ्य दिया

गया है, उसके गुण दोषों के बारे में चर्चा करते हुए राकेश ने अपने एकांकी संग्रह में दिया हुआ कथ्य किस प्रकार उचित और अनुचित है इसका जिक्र करते हुए अंत में मैंने अपना मत भी प्रकट करने का प्रयास किया है।

चतुर्थ अध्याय में राकेश ने अपने एकांकियों में जो अभिनेयता प्रस्तुत करने का प्रयास किया है वह कहाँ तक उचित है यह स्पष्ठ करने से पहले भिन्न-भिन्न विद्वानों ने अभिनय के गुणोंपर जो मत प्रकट किया है उसका जिक्र करते हुए आधुनिक अभिनय के गुणों की विषद चर्चा की है। उसमें कथावस्तु, पात्र, संवाद, भाषा, दृश्यविधान, पार्श्वसंगीत व ध्वनि, वेशभूषा, प्रकाश आयोजन आदि तत्वों को दिया गया है। इसप्रकार राकेश के एकांकियों में चित्रित अभिनेयता को उपरोक्त तत्वों के आधारपर प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

उपसंहार में पूरे लघुशोध प्रबंधका सारांश देते हुए निष्कर्ष रूप में मैं अपने मत को प्रकट करने का प्रयास किया है।

अंतमें इनमें होनेवाले त्रुटियों को स्विकार करते हुए यह लघुशोध प्रबंध प्रस्तुत कर रहा हूँ।

शोधछात्र

[श्री कुबेर शेडबाळे]

कोल्हापुर।

दिनांक : ३१-१२-१९९७।